केनजी और जादुई बत्तखें
जापानी लोककथा

केनजी और जादुई बत्तखें

जापानी लोककथा
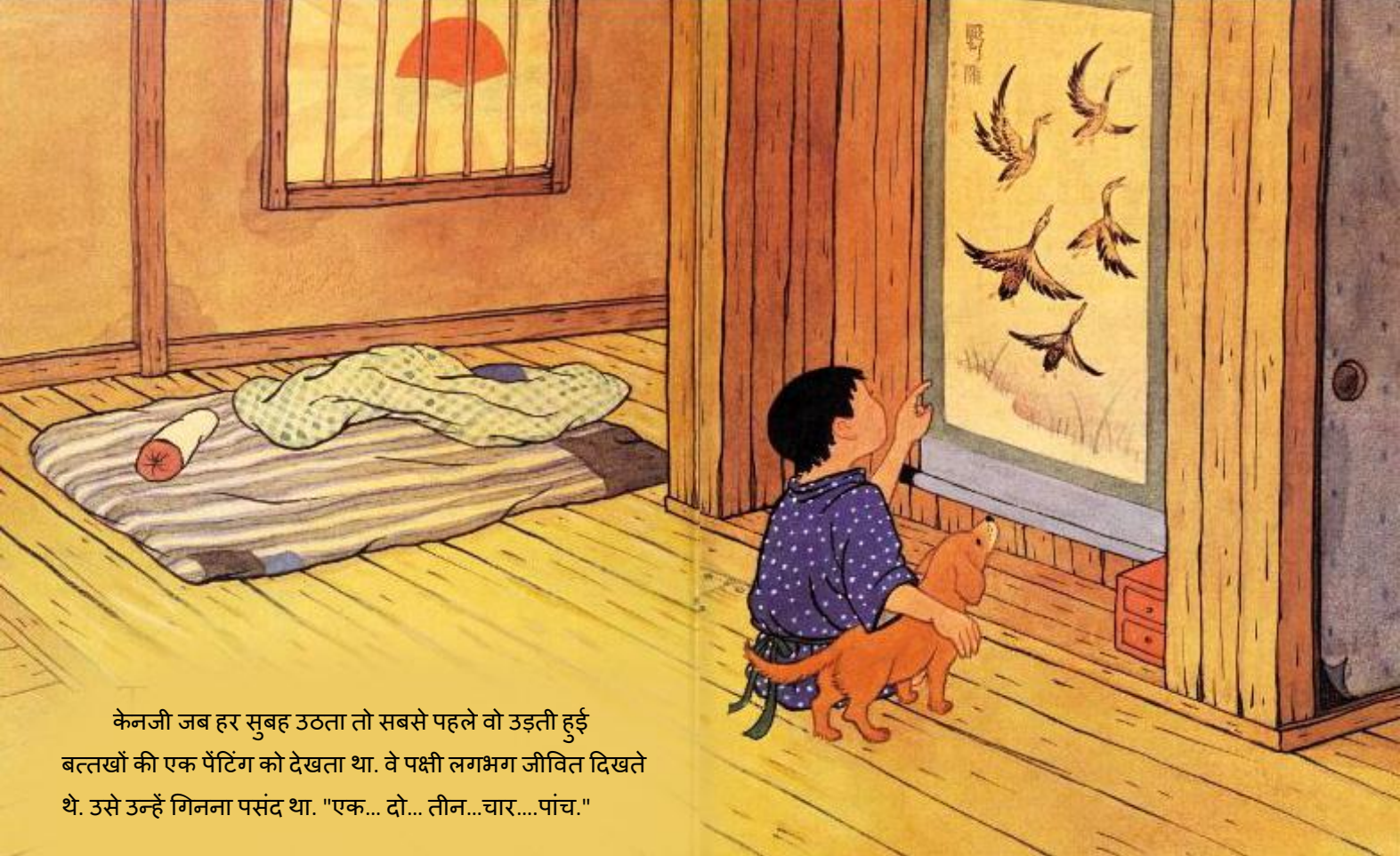
केनजी जब हर सुबह उठता तो सबसे पहले वो उड़ती हुई बत्तखों की एक पेंटिंग को देखता था. वे पक्षी लगभग जीवित दिखते थे. उसे उन्हें गिनना पसंद था. "एक... दो... तीन...चार....पांच."

हर साल जब जंगली बत्तखें जापान में उनके घर के ऊपर से उड़ती थीं तो केनजी हंसता था और अपनी पैंटिंग की बत्तखों को चिढ़ाता था. "तुम बस मेरे कमरे की दीवार पर आधी उड़ान भरती हो - क्या तुम कभी जंगली बत्तखों के साथ ऊंची उड़ान भरना पसंद नहीं करोगी?"
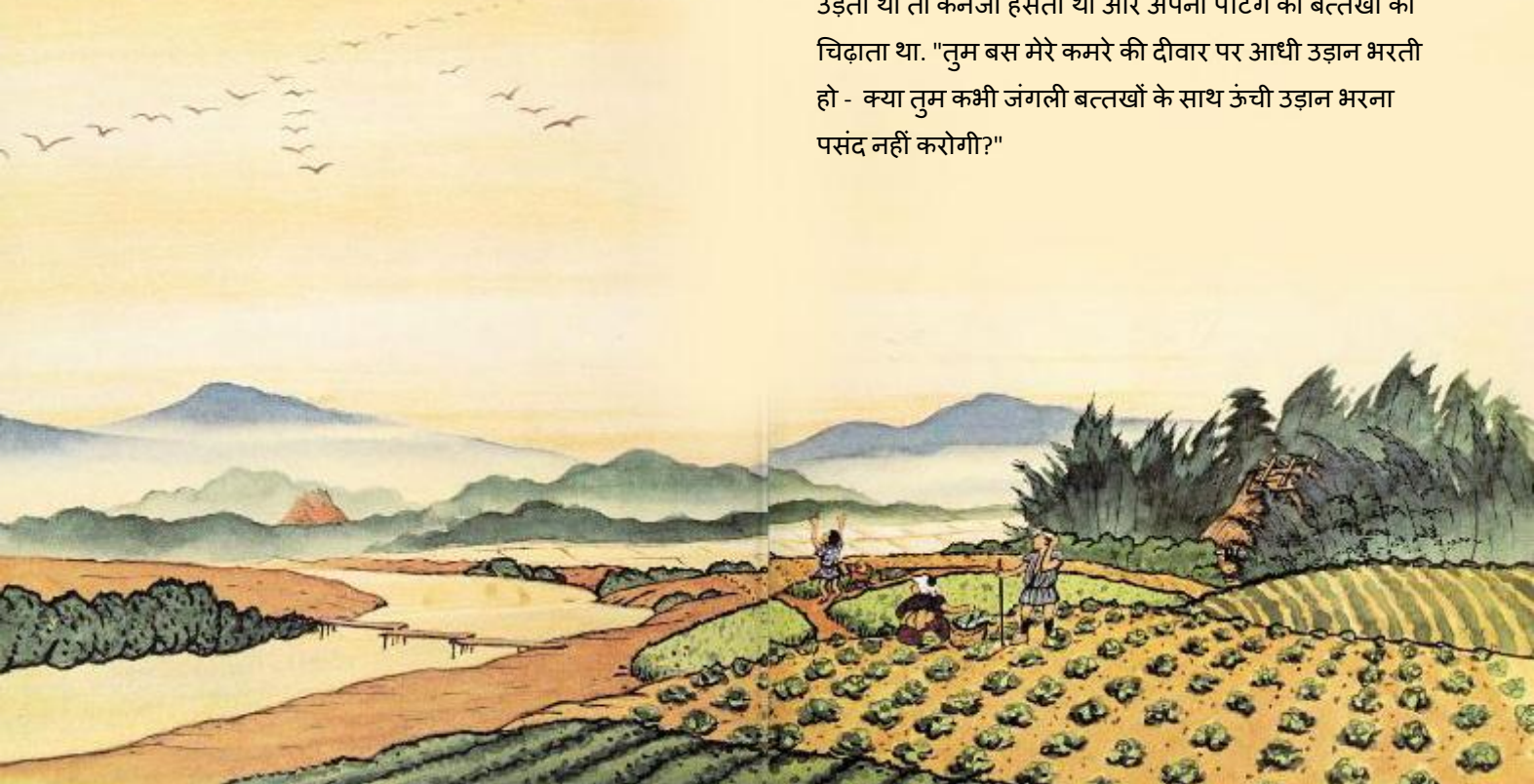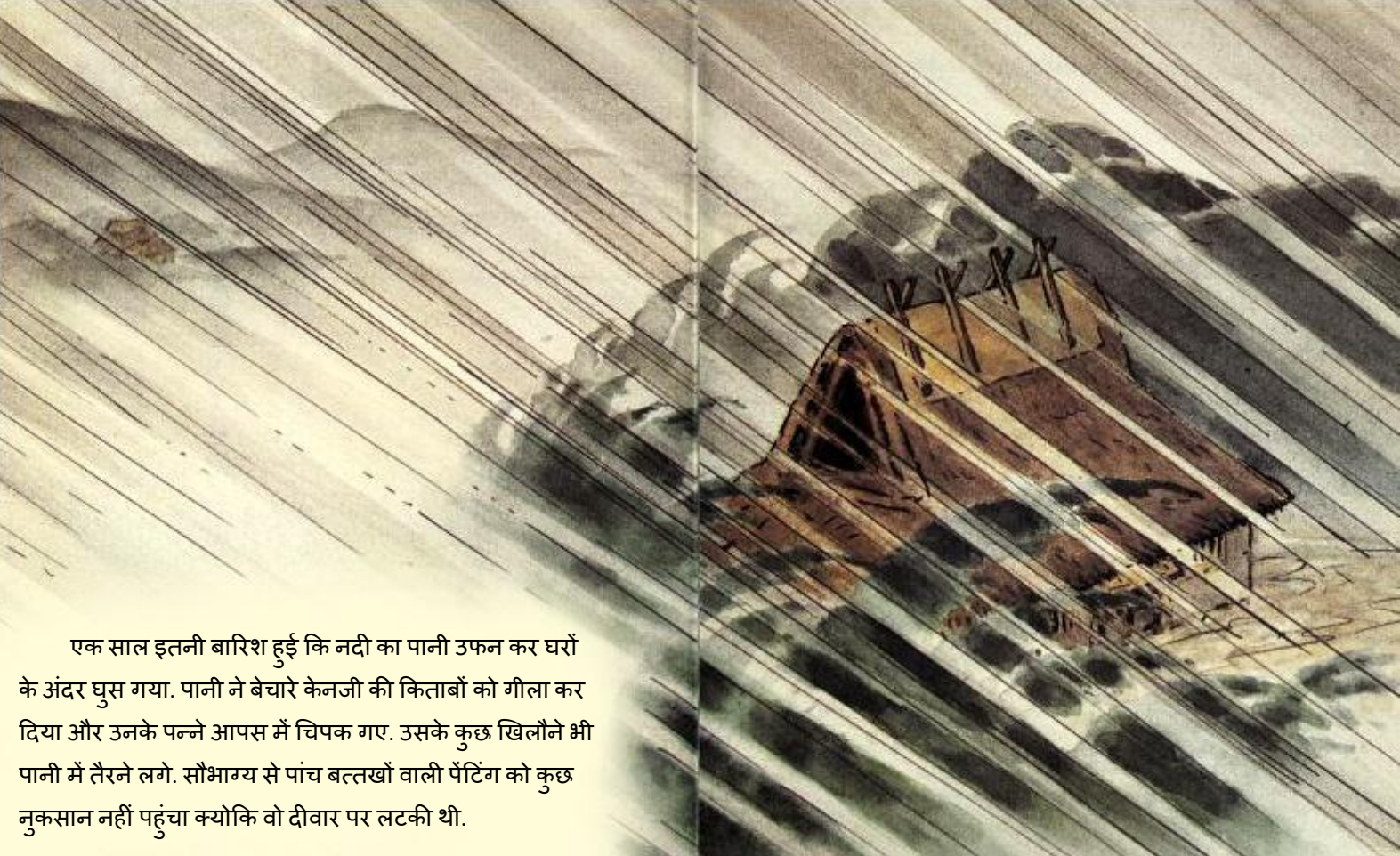
एक साल इतनी बारिश हुई कि नदी का पानी उफन कर घरों के अंदर घुस गया. पानी ने बेचारे केनजी की किताबों को गीला कर दिया और उनके पन्ने आपस में चिपक गए. उसके कुछ खिलौने भी पानी में तैरने लगे. सौभाग्य से पांच बत्तखों वाली पेंटिंग को कुछ नुकसान नहीं पहुंचा क्योकि वो दीवार पर लटकी थी.

जब पानी नदी में वापस चला गया, तो केनजी बांस के झुरमुटे में खेलने के लिए गया. उसने एक बूढ़े आदमी को अपने दरवाजे पर अपनी छड़ी से दस्तक देते हुए देखा. वो आदमी नाक पर एक मोटा, गोल चश्मा पहने था. केंजी को वो आदमी एक उल्लू की तरह दिखा - एक भूखे उल्लू की तरह!

केनजी बांसों में छिप गया, कुछ देर बाद वो उल्लू-आदमी कहीं चला गया.

"पिताजी," उसने पूछा, "वो आदमी कौन था?"

"एक कला संग्राहक यानि आर्ट कलेक्टर," उसके पिता ने कहा, “वो आदमी पेंटिंग खरीदता है. बाढ़ से हमारे घर के चावल सड़ गए हैं. अब हमें खाना खरीदने के लिए अपनी पेंटिंग बेचनी होगी.”

केनजी रोना चाहता था क्योंकि उसे वो पेंटिंग बेहद पसंद थी. वो जानता था कि उसके माता-पिता को भी वो पेंटिंग पसंद थी. उस पेंटिंग को लगभग तीन सौ साल पहले एक प्रसिद्ध कलाकार ने बनाया था.

जिस दिन कला संग्राहक पेंटिंग लेने आने वाला था उस दिन केनजी ने जंगली बत्तखों को हांक-हांक, हांक-हांक कहते हुए सुना. वे दक्षिण की ओर लंबे पलायन के रास्ते उसके शहर के ऊपर से उड़ रही थीं.

"इससे पहले कि तुम उस बूढ़े कलेक्टर के घर में जाकर रहो," उसने पेंटिंग की बत्तखों से कहा. "मैं तुम्हें एक यादगार अनुभव देना चाहता हूँ. मैं तुम्हें जंगली बत्तखों के साथ आसमान में उड़ने का मौका देना चाहता हूँ."

बड़े ध्यान से उसने अपनी सबसे बड़ी पतंग पर बत्तखों वाली पेंटिंग को चिपकाया. पतंग आसमान में ऊपर और ऊपर उड़ी. पेड़ों और घरों के भी ऊपर. जंगली बत्तखों ने हांक-हांक, हांक-हांक कहा. पतंग को हवा ने जोर से खींचा जैसे कि पेंटिंग में मौजूद बत्तखें उन जंगली बत्तखों के साथ उड़ना चाहती हूँ.
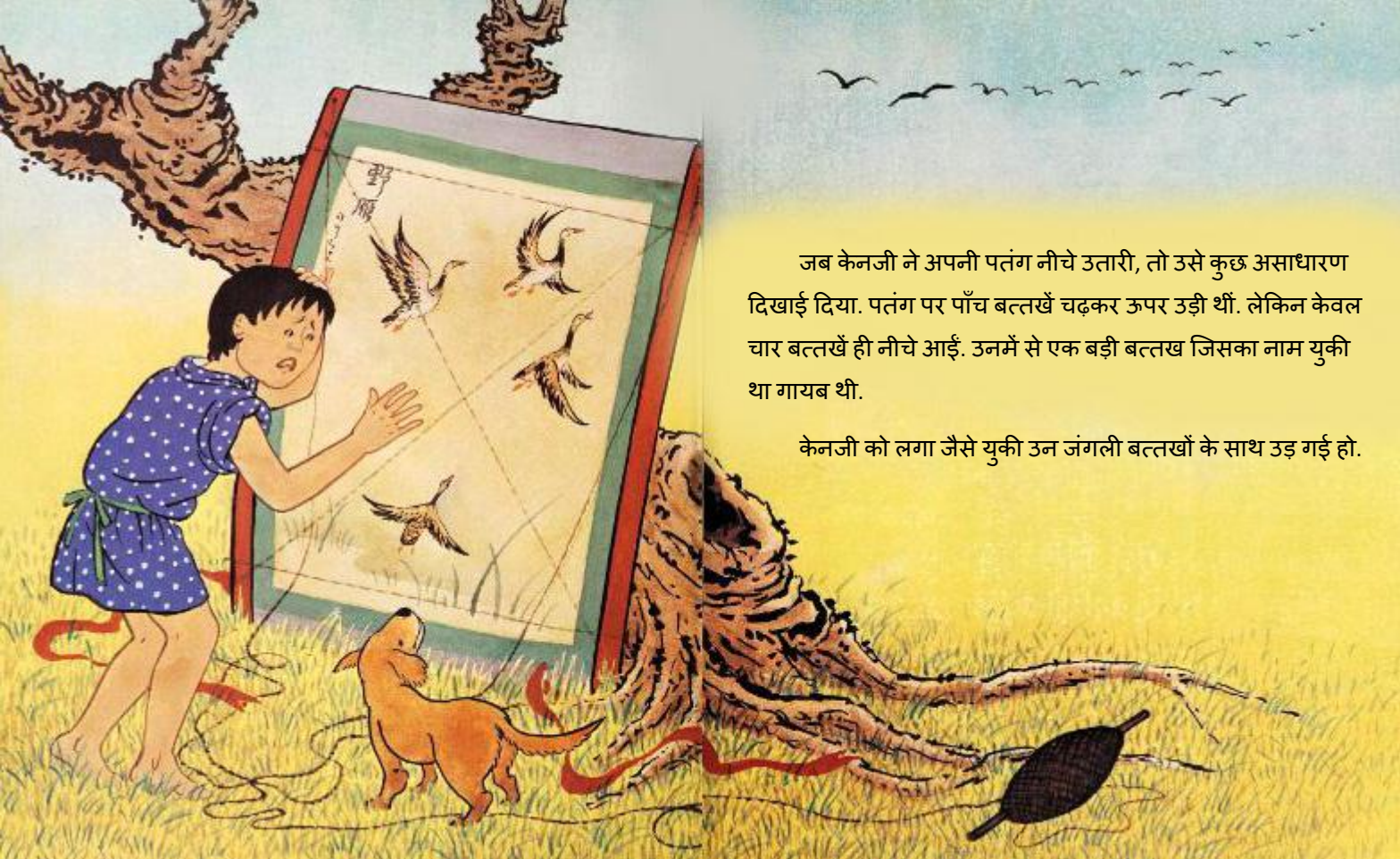
जब केनजी ने अपनी पतंग नीचे उतारी, तो उसे कुछ असाधारण दिखाई दिया. पतंग पर पाँच बत्तखें चढ़कर ऊपर उड़ी थीं. लेकिन केवल चार बत्तखें ही नीचे आईं. उनमें से एक बड़ी बत्तख जिसका नाम युकी था गायब थी.

केनजी को लगा जैसे युकी उन जंगली बत्तखों के साथ उड़ गई हो.

कला संग्राहक ने इस बात को मानने से इंकार किया. "अर्रे!" वो गुस्से में चिल्लाया. “चार-बत्तखों वाली पेंटिंग! हर कोई जानता है कि उसमें पांच बत्तखें होनी चाहिए. किसी ने पेंटिंग में से सबसे बड़ी बत्तख को मिटा दिया है. उससे पेंटिंग बर्बाद हो गई है!”

फिर उसने अपनी छड़ी को ज़मीन पर पटका और वहां से चला गया.
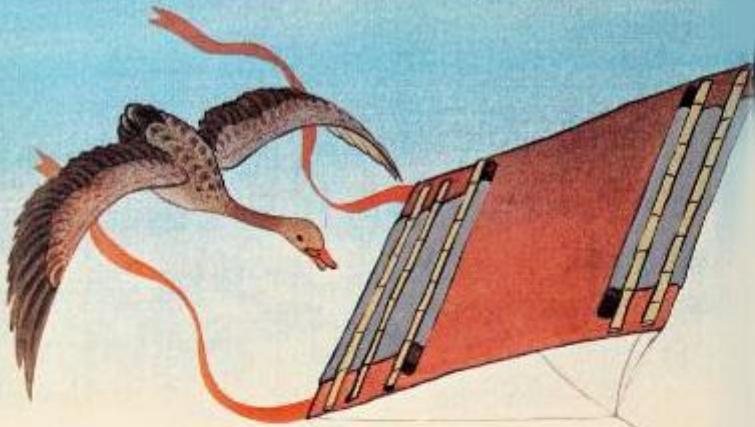
उस रात घर में खाने के लिए और कुछ भी नहीं बस थोड़ा सा चावल था. कोई सूप, नूडल्स, टोफू या केक नहीं था.

लंबी सर्दी धीरे-धीरे बीत गई. यहां तक कि हवा भी घर से टकराते समय एक भूखे पिल्ले की तरह आवाज़ कर रही थी. और जंगली बत्तखें उत्तर की ओर पलायन करते समय हांक-हांक, हांक-हांक की आवाज़ करते हुए दुखी लग रही थीं.

जैसे ही केनजी ने बत्तखों को सुना तो वो तुरंत सीधा बैठ गया. फिर उसने दीवार से पेंटिंग उतारी और उसे सावधानी से अपनी पतंग पर जल्दी से चिपकाया.

सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा उसने आशा की थी. उसे अपनी पतंग की डोरी पर एक खिंचाव महसूस हुआ और जब उसने अपनी पतंग उतारी, तो पेंटिंग में पाँच बत्तखें थीं. उसने सुनिश्चित करने के लिए उन्हें गिना: "एक दो, तीन, चार, पाँच."

फिर वो माता-पिता को यह बताने के लिए दौड़ा कि युकी बत्तख वापस आ गई थी.
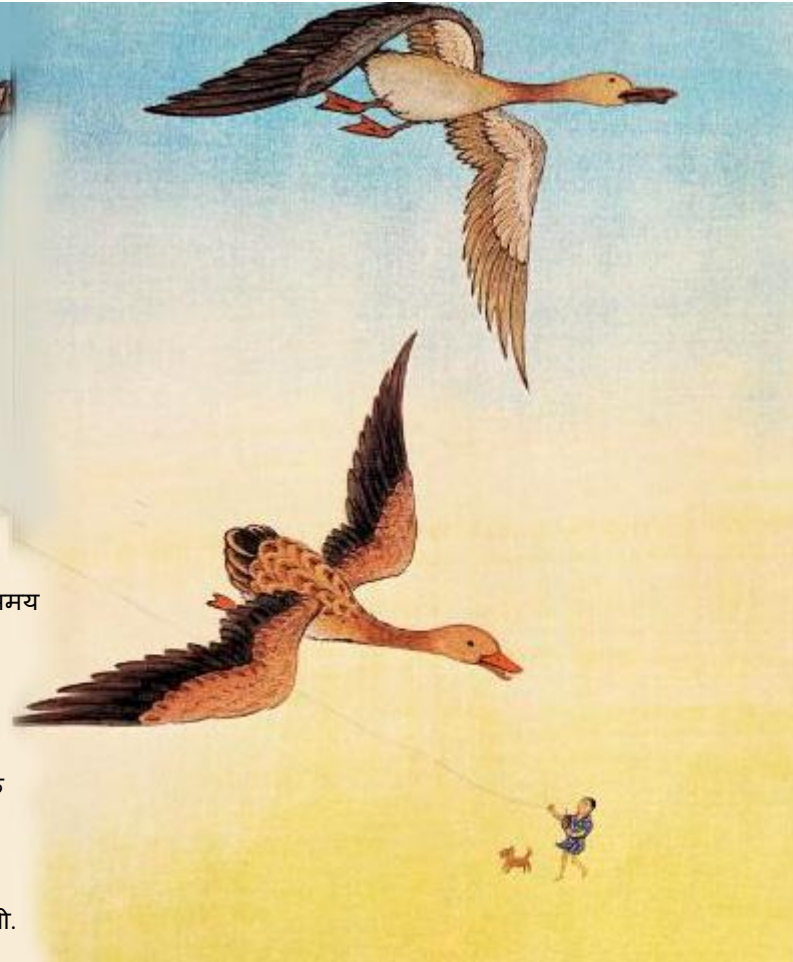
केनजी के पिता ने उसके बाद पेंटिंग को एक लोहे की अल्मारी में सुरक्षित रूप से छिपा दिया. फिर उन्होंने आर्ट कलेक्टर को लिखा.

इस बार जब कला कलेक्टर ने तस्वीर देखी, तो उसने अपने हाथों को हवा में हिलाया और कहा "अरे," वो घुर्राया. “पिछली बार मैंने महान कलाकार की पेंटिंग को बर्बाद देखा था क्योंकि उसमें से एक बत्तख चली गई था! इस बार किसी बच्चे ने रगड़कर उस पेंटिंग को बर्बाद किया है! '

फिर उसने अपनी छड़ी को पटका और गुस्से में वहां से चला गया.

बेचारे केनजी के पिता अपना सिर रगड़ते रह गए. अब पेंटिंग पर अजीब निशान थे - ऐसे निशान जिन्हें रगड़कर मिटाना संभव नहीं था.

केनजी को उसके बारे में कुछ कहने को नहीं था.

उस मध्य रात को केनजी नींद से जगा. "मुझे कुछ अजीब आवाजें सुनाई दे रही हैं," उसने अपने माता-पिता से कहा. "चिप-चिप की आवाजें. वे लोहे की अल्मारी में से आती लग रही हैं."

केनजी के पिता ने कहा, "सब लोग पीछे खड़े रहो." फिर उन्होंने अल्मारी का दरवाजा खोला.

"ज़रा पेंटिंग को देखें!" केनजी चिल्लाया.

जो दो निशान जिन्हें पहले रगड़ना संभव नहीं था वे अब गायब हो गए थे. उनके स्थान पर दो बत्तख के छोटे- छोटे बच्चे थे. वे हिल नहीं रहे थे. वे बस वहीं थे, जैसे कि कलाकार ने उन्हें चित्रित किया हो.

"मुझे पता है," केनजी ने कहा. "चित्र पर वे दो निशान युकी बत्तख के चूज़े हैं."

केनजी के पिता ने कला कलेक्टर को एक और पत्र लिखा. इस बार आदमी की उल्लू जैसी आँखें आश्चर्य और खुशी से चौड़ी हो गईं. उसके होंठ एक भूखे लड़के की चॉपस्टिक्स जैसे बोले. "मास्टरपीस! एक उत्कृष्ट कृति! एकदम दुरुस्त हालत में. उसमें कोई भी बत्तख गायब नहीं है, और किसी बच्चे ने उसे रगड़ा भी नहीं है. पाँच उड़ने वाली बत्तखें और उनके दो बच्चे. पाँच बत्तखों की पेंटिंग के बारे में तो सभी जानते हैं. लेकिन इस सात-बत्तखों की पेंटिंग के बारे में शायद किसी ने कभी सुना न हो. यह एक महान खोज है!"

उस आदमी ने पेंटिंग खरीदने के लिए बटुए से पैसा निकाले, लेकिन केनजी के पिता ने कहा, "आपका धन्यवाद, माननीय महोदय, लेकिन मेरी पत्नी, मैंने, और हमारे छोटे लड़के ने पेंटिंग नहीं बेचने का फैसला किया है. आप इसे अपने बड़े घर में कहीं लटका देंगे, जहां कोई भी इसे नहीं देख पाएगा. हमें लगता है कि इस तरह की बेहतरीन पेंटिंग को देखने का आनंद सभी लोगों को मिलना चाहिए."

"अरे," आर्ट कलेक्टर बड़ी ज़ोर से चिल्लाया. उसने अपनी छड़ी पटकी और वहां से विदा हुआ.

"रुको," केनजी के पिता ने कहा "आप चाहें तो टिकट खरीदने वाले हमारे पहले सम्मानीय ग्राहक हो सकते हैं - आपको सिर्फ एक सिक्का देना होगा. यह एकमात्र चित्र है जिसमें सात बत्तखें हैं. एक छोटे सिक्के का सभी लोग भुगतान कर पाएंगे. मुझे लगता है कि जापान में हर कोई इस पेंटिंग को देखने के लिए आएगा. चीन और अमेरिका से भी लोग आ सकते हैं."

जल्दी ही यह खबर आग जैसे फैल गई. लोग बड़ी संख्या में पेंटिंग को देखने आने लगे. लेकिन उन दोनों छोटी बत्तखों के आकार के बारे में लोगों में कोई भी आम सहमति नहीं बन पाई.

केनजी ने समझाया, "वे सिर्फ बढ़ रहे हैं, बस इतना ही."

"एक पेंटिंग में बत्तखें कैसे बढ़ सकती हैं?" लोग अक्सर पूछते थे.

केनजी ने केवल इतना कहा, "मुझे लगता है कि वे केवल तभी बढ़ते हैं जब उन्हें कोई देख नहीं रहा होता है."

समय गुजरता गया. और फिर एक चांदनी सर्दी की रात में, जंगली बत्तखों ने अपनी लंबी दक्षिण यात्रा के लिए फिर से केनजी के घर के ऊपर से उड़ान भरी. केनजी उनकी रोमांचक, दूर से आती एकाकी आवाज़ को सुनकर सो गया.

उसने सपना देखा कि एक जंगली बत्तख नीचे उड़कर आई और वो खुली खिड़की के ठीक बाहर बैठकर धीमी आवाज़ें करती रही. उससे अंधेरे कमरे में तेज हलचल हुई और केनजी के गाल से कुछ छुआ.

सुबह उसकी माँ ने पूछा, "तुम्हारे गाल पर यह खरोंच कहाँ से आई, केनजी?"

केनजी को खरोंच का अहसास तक नहीं हुआ, लेकिन जब उसने पेंटिंग में बत्तखें गिनीं तो वो बहुत उत्साहित हुआ. एक. .दो. .तीन.. चार ... पांच - बस उतनी ही! तो फिर वो एक सपना नहीं था.

केनजी उन युवा बत्तखों के उड़ जाने से दुखी नहीं था. "वे वसंत में फिर वापस आएंगे," उसने सबसे कहा, क्योंकि वे साथ कुछ समय अपने पिता और जंगली बत्तखों के साथ रहना चाहते हैं और कुछ समय अपनी मां युकी, और मेरे साथ भी."

समाप्त